# सरलता

## सदैव सुखी रहने की श्रेष्ठ चाबी

पूर्ण पुरुषोत्तम
भगवान स्वामिनारायण

## श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था (SMVS)

जीवनप्राण
अबजीबापाश्री

सत्य, अहिंसा, प्रामाणिकता, पारिवारिक एकता आदि सामान्य आचरण से लेकर आध्यात्मिक दिव्य आचरणों का सिंचन करना और सनातन भगवान स्वामिनारायण की सर्वोपरी उपासना और अनादिमुक्त की आध्यात्मिक अलौकिक स्थिति का आस्वाद लेते हुए एक दिव्य समाज की रचना कर, श्रीजीमहाराज का प्यारा समाज तैयार करना यही इस आध्यात्मिक स्वामिनारायण संस्था का लक्ष्य है।

देश और समाज की प्रत्येक व्यक्ति में आध्यात्मिकता की नई चेतना प्रकट करके जीवन परिवर्तन के महत्त्वपूर्ण कार्य में यह **SMVS** संस्था सतत सक्रिय रहती है। संस्था के करीब १०० संत-पार्षद और करीब १०१ त्यागी महिलामुक्तों, १०,००० से अधिक कार्यकर्ता और स्वयंसेवक संस्था द्वारा चल रहे सैकड़ों बाल-बालिका मंडल, युवा-युवती मंडल तथा पुरुष-महिलाओं के संयुक्त मंडल में जीवन परिवर्तन की दिव्य प्रेरणा प्रदान कर अपने जीवन की साफल्यता का अनुभव कर रहे हैं। नए-नए आध्यात्मिक अभियानों द्वारा जन-जन तक पहुंचकर अज्ञान और दुःखरूपी तिमिर को दूर कर, ज्ञान और सुखरूपी प्रकाश फैला रहे हैं।

भारत, यु.के., अमरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कुवैत, दुबई, केन्या, युगांडा, झाम्बिया आदि देशो में आध्यात्मिक सेवाओं के स्तर को बढ़ाने के साथ-साथ यह संस्था सर्वजनहितावह ऐसे सामाजिक सेवाकार्यों में भी शामिल है। शिक्षा, संस्कार और सत्संग का त्रिवेणी संगम खड़ाकर गुरुकुल जैसे संकुलो का निर्माण करके कई तरुणों के जीवन को आकार देने का सेवाकार्य और ज़रूरतमंदों को शैक्षिक और चिकित्सा सहाय की सेवा से लेकर वस्त्रदान, रोगनिदान कॅम्प, रक्तदान कॅम्प जैसी अनेक सेवाएं और चिकित्सा सेवाओं में विशेष रूप से मेडिकल सेन्टर तथा **SMVS** स्वामिनारायण अस्पताल आदि सेवाएं भी इस संस्था द्वारा की जाती हैं। चाहे भूकंप या कोरोना की आपदा हो या बाढ़ की तबाही किन्तु जनहित के लिए राहतकार्यों की सेवा में यह संस्था हर जगह खड़े पैर मौजूद रहती है।

संस्था की ऐसी मूल्यवान आध्यात्मिक, सामाजिक तथा सर्वजनहितावह सेवा-परिचर्या का उजाला सर्वत्र जनमानस में फैल चुका हैं। देश और समाज के जन-जन के प्रति यह संस्था अपने सेवाकार्य और आध्यात्मिक मूल्यों की सुगंध फैलाने में सदैव अग्रेसर रही है और आगे भी रहेगी।

# सरलता

## सदैव सुखी रहने की श्रेष्ठ चाबी

संपादन एवम् अनुवाद कार्य

साहित्य लेखन विभाग

प्रकाशक

सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट,

स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर - ३८२४२१

# सरलता

## सदैव सुखी रहने की श्रेष्ठ चाबी

**रजूकर्ता** : स्वामिनारायण मंदिर वासणा संस्था (**SMVS**)

**आद्य स्थापक** : शुद्ध उपासना प्रवर्तक
प.पू. अ.मु. सद्. श्री देवनंदनदासजी स्वामीश्री (गुरुदेव प.पू. बापजी)

**प्रेरक** : प.पू. अ.मु. सद्. श्री सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री
(गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री)

**संपादन एवम्**
**अनुवाद कार्य** : साहित्य लेखन विभाग

**आवृत्ति** : प्रथम, फरवरी-२०२६

**प्रकाशक** : सत्संग साहित्य डिपार्टमेन्ट
स्वामिनारायण धाम, गांधीनगर-३८२४२१

# गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री के दिव्य आशीर्वाद

कारण सत्संग अर्थात् परभाव का सत्संग। अनादिमुक्त की स्थिति प्राप्त करने का सत्संग। महाराज और सत्पुरुष की केवल कृपा से हमें अनादिमुक्त का सर्वोत्तम पद तो मिल गया है। लेकिन अब हमारा पवित्र कर्तव्य है उस पद को शोभा दे ऐसा जीवन करने का। क्योंकि परभाव शोभा देता है अवरभाव से।

अनादिमुक्त विश्वम् में प्रवेश प्राप्त करने से पहले हमारे हर एक के जीवन में विनम्रता, सरलता, कोमलता, दासत्वभाव आदि गुणों को विकसित करना आवश्यक है। जिससे हमारा अवरभाव शोभित हो उठे। साथ ही, इन गुणों को स्वजीवन में चरितार्थ करने से घर–परिवार में तथा सत्संग में दिव्य आत्मीयता का सर्जन होता है। तब यह पुस्तिका आप सभी के लिए एक पथदर्शक समान बनी रहेगी।

इसलिए पूरे समाज को हमारी विशेष नम्र सिफारिश है कि, इस 'सरलता' पुस्तिका का बार बार पठन–मनन करके उसके अनुसार जीवन करने का प्रयास करेंगे उन पर महाराज, बापा तथा गुरुदेव बहुत राजी होंगे और अनादिमुक्त विश्वम् में प्रवेश प्राप्त करने की पात्रता में वृद्धि करेंगे।

સ્નેહ સાધુ સત્યસંકલ્પદાસના
જય સ્વામિનારાયણ

# प्रस्तावना

सरलता हमें परिवार और सत्संग के सदस्यों के साथ प्रेम के धागों से जोड़ती है। जो दो हृदयों के बीच बंधी पूर्वाग्रह की दीवार को तोड़ती है और प्रेम का सेतु बांध देती है। घर-परिवार में सरलता के बिना संबंध ऊपर से तो झगमगाते तारे जैसे लगते हैं लेकिन भीतर घना अंधकार होता है।

हम कितने भी ज्ञानी, शक्तिशाली या वैभवशाली हों लेकिन यदि सरल नहीं हैं तो लोगों के हृदय में हमारा कोई अस्तित्व ही नहीं रहता। सरल व्यक्ति ही हमेशा परिवार में आत्मीयता और आनंद की महक प्रसारित कर सकती है।

सरल व्यवहार से संबंधों में मिठास बनी रहती है। इसलिए अपनी पकड़, संकल्प (अपना तय किया हुआ), मनचाहा छोड़कर सभी के साथ सरल होकर व्यवहार करने की अत्यंत सरल रीति सिखाना इस 'सरलता' पुस्तिका का लक्ष्य है। इस पुस्तिका में सरलता का अर्थ विश्लेषण, सरलता का महत्त्व, फायदे, उपाय आदि की समझ महाराज और सत्पुरुष के जीवन के दिव्य प्रसंगों से तथा अन्य प्रेरणादायी प्रसंगों से दी गई है।

इन प्रसंगों से स्वजीवन में क्या चरितार्थ करना चाहिए इसका संक्षिप्त बोध भी दिया गया है। आशा है कि यह पुस्तिका हमारे स्वजीवन में सरलता के गुण को प्रकटाने में अत्यंत सहायक बनेगी।

**– साहित्य लेखन विभाग**

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| ● **सरलता आत्मा का श्रृंगार** | | **०६** |
| १. | प्रसादी के केश | ११ |
| २. | बेंत की छड़ी | १२ |
| ३. | श्रीजीमहाराज की बाड़ी | १३ |
| ४. | संपूर्ण सर्मपित | १४ |
| ५. | हलवी ले (चला ले) वह साधु | १५ |
| ६. | सच्ची प्रेरणा | १६ |
| ७. | बाल्कनी बाकी रह गई !! | १८ |
| ८. | संबंधों में संवादिता | १९ |
| ९. | इट्स ओके | २१ |
| १०. | युवक और वृद्ध पिता | २२ |
| ११. | आप कहो वह | २३ |
| १२. | सुझाव बॉक्स | २४ |
| १३. | गाड़ी का रास्ता | २५ |
| १४. | गलती का स्वीकार | २६ |
| १५. | एक प्रदक्षिणा अधिक | २८ |
| १६. | अखबार वाले भाई | २९ |
| १७. | स्वभाव की फ्लेक्सिबिलिटी | ३० |
| १८. | सच्ची महानता | ३१ |
| १९. | साइकिल का भाव | ३२ |
| २०. | श्रेय किसके सिर पर ? | ३३ |
| २१. | पॉजिटिव रिक्वेस्ट | ३४ |
| २२. | संबंधों की कीमत | ३५ |
| ● **गुरुजी के कृपावचन** | | **३६** |

# सरलता आत्मा का श्रृंगार

सरलता वह भक्त जीवन का श्रृंगार है, आत्मा की कोमलता है, आत्मिक लगाव की नमी है। सरलता अर्थात् क्या ? तो, अपनी पकड़ को ढीली छोड़ना, तय किए संकल्प को छोड़ना, जिद छोड़ना, दलीलें बंद करके दूसरों की बात स्वीकारना और अपने दुराग्रह को छोड़कर किसी की बात में संमत हो जाना। नींबू के पानी की तरह सभी के साथ घुल-मिल जाना। यह है सरलता।

श्रीजीमहाराज ने सरलता गुण की महत्ता दर्शाते हुए 'श्रीहरिचरित्रामृतसागर' ग्रंथ के पूर-५, तरंग-१३ में कहा है कि, "सरल चित्त रहना अनंत गुणों का मूल है। सरलता के बिना मेरु जितने गुण हो तो भी टिकते नहीं।"

आज पैसे, पद और प्रतिष्ठा की भागदौड़ में मनुष्य का हृदय कठोर, स्वभाव जिद्दी (हठीला) और अहंकार आसमान छूता जा रहा है। अपनी तय की हुई बात या मान्यता को साबित करने में सरलता का बाष्पीभवन हो जाता है। आज घर घर की समस्याओं की जड़ अकड़ता, ठरावी-जिद्दी स्वभाव बन रहे हैं। जीवन तनावयुक्त बन रहा है। दुनिया में होने वाले युद्ध तथा किसी भी क्षेत्र में सृजित प्रश्नों का कारण भी व्यक्तिगत ठराव और मान्यताएं ही होती हैं।

समय-संजोग-परिस्थिति बदलते रहते हैं लेकिन स्वभाव अकड़ होता जा रहा है। बढ़ती उम्र में शरीर क्षीण होता जा रहा है लेकिन अहंकार ताकतवर बनता जा रहा है। इसलिए आग्रह छूटते नहीं और विग्रह

सृजित होते हैं। पकड़ जितनी पक्की उतने प्रश्न अधिक सृजित होते हैं।

देख देखकर देखा है परिवार में या व्यवसाय में प्रश्न उत्पन्न होने का कारण बहुधा 'आई एम राइट' का विचार है। और 'आई एम राइट' की विचारधारा से शुरू होती है 'फाइट'। उस समय केवल 'शायद मैं गलत भी हो सकता हूं' बोलते ही फाइट पूरी हो जाती है। वातावरण लाइट हो जाता है। संबंधों की हाइट बढ़ जाती है।

जरा एक नजर अपनी पसंद और वास्तविक जीवन की ओर करें।

हमें कैसी व्यक्ति पसंद है? कौन हमारा पसंदीदा पात्र है?

अपनी पकड़ पकड़े रखे वह या जो छोड़ दे वह?

अपने आग्रह पर अकड़ रहे वह या सरल स्वभावी हो वह?

सामने तर्क वितर्क करे वह या गम खा जाए, निगल जाए वह?

बुद्धि से तर्क करने वाली या निःसंशय होकर बात स्वीकारने वाली?

जिद्दी और हठीले स्वभाव वाली या सहज नर्म अभिगम वाली?

यहां तो हमने दूसरों की पसंद की बात की। अब जरा स्वजीवन की ओर नजर करें कि, मेरा जीवन मुझे पसंदीदा व्यक्ति जैसा है या नापसंदीदा व्यक्ति जैसा है? पसंद ऊंची है और वास्तविकता अलग है। शायद स्वीकार हो या स्वीकार न हो लेकिन हकीकत यह है। जो हमारे भक्त जीवन और मुक्त पदवी को लांछन

लगाती है। इसलिए ही बापाश्री ने हमारे स्वभाव के बारे में टिप्पणी करते हुए भाग-२ की ४० वीं बात में कहा है, ''कोई उंगली न उठा सके ऐसा शांत और सरल स्वभाव रखें।''

कई बार हम मनचाहा करने-करवाने में जीत और सरल हो जाने में हार मानते है। लेकिन वह वास्तव में हार ही है। सरल हो जाने वाला सामने वाली व्यक्ति के हृदय को जीत लेता है। इसलिए ही बापाश्री ने सिखाया है कि, 'भगवान के भक्त को हारकर राजी होना।'

वास्तव में जो सरल होकर छोड़ देते है वह मूर्ख नहीं बल्कि बुद्धिशाली है। क्योंकि, वह दो पैसे का अभिमान छोड़कर करोड़ो का संबंध खरीद लेते हैं। अब हमें जीवन में मूर्ख बनना है या बुद्धिशाली यह हमारी पसंद की बात है। इसलिए ही किसी ने गाया है कि,

''जाने दे उसका कुछ नहीं जाता, जग में रहती उसकी बातें रे;
माफ कर दिल साफ करें, उसका अलग पड़े प्रभाव रे।''

जिसका व्यक्तित्व सरल होता है उसे दुनिया में सभी बार-बार याद करते हैं और जिद्दी, अकड़ स्वभाव वाले की सभी शिकायत करते हैं। सरलता को जीवन में उतार लेने के लिए हमारे संकल्प, मान्यता, पकड़ का बाष्पीभवन करना ही पड़ेगा। अर्थात् आप सच्चे हैं, मैं गलत हो सकता हूं ऐसा कहना। शायद 'आप सच्चे' ऐसा बोल सकते है लेकिन 'मैं गलत' ऐसा तो मर्द ही बोल सकता है। अहंकार को पिघलाकर

अस्तित्व का प्रलय करने वाला ही बोल सकता है। क्योंकि, अहंकार और सरलता कभी साथ रह नहीं सकते।

अपनी पकड़ और आग्रह को छोड़े बिना सत्पुरुष के आग्रह से अपना तय किया हुआ छोड़ देने क्षमायाचना होती है तो वह होठों से होती है; हार्ट (हृदय ) से नहीं। इसलिए हृदय से क्षमा मागकर सरल होने के लिए गुरुजी प.पू. स्वामीश्री ने छः शब्दों को रोजाना जीवन में उपयोग करने को कहा है : (१) Ok, (२) ठीक है, (३) भले, (४) Sorry, (५) राजी रहना, (६) माफ करना

इन छः शब्दों को सरलता ग्रहण करने का जीवनसूत्र बना दें। किसी को प्रेरणा दूंगा लेकिन प्रेशर (दुराग्रह) नहीं करूंगा। प्रेशर प्रॉब्लम (प्रश्न) खड़े करता है। जरूरत हो तो एक्यूप्रेशर दूंगा जिससे प्रॉब्लम दूर होती है।

**जीवन ऐसा सरल रखो कि तुम्हारा वर्तन किसी को विघ्न रूप न बने;**
**ज्ञान का समुद्र बनकर क्या फायदा ? फैलाएगा अहं का खारापन।**
**बनना हो तो बनो छोटा लेकिन मीठा सरोवर;**
**जहां दूसरों की तो क्या सिंह की भी पानी पीने के लिए झुके गर्दन।**

# जाने दे उसका कुछ नहीं जाता...

जाने दे उसका कुछ नहीं जाता, जग में रहती उसकी बातें रे;
माफ कर दिल साफ करें, उसका अलग पड़े प्रभाव रे... टेक
व्यर्थ बातों को पकड़ न रखनी, उसमें दिमाग मार बहुत खाता रे;
माफी मागनी वह काम मर्द का, उसकी स्मृति में मिलेगी बातें रे... जाने दे ०१
मन प्रसन्न तो चित्त की शांति, उसका हृदय रहता रंग रंगीला रे;
उसके उर उदार दिल में दातारी, उनका हिया हरदम हरखाता रे... जाने दे ०२
भलाई और नेकी में जुड़ जाना, क्यों उसे जाने देना रे;
निमित्त बन जा नीति साधना में, बाकी हरि करें वही सत्य रे... जाने दे ०३
कोरे पुस्तक पर सुविचार का, खोल दो आज से खाता रे;
ऋण हो किसी का तो चुका देना, जो जमा बोलता हो अपना रे... जाने दे ०४
दोष खुद का देख ले प्रेमजी, गुरु ज्ञान से ही जान सके रे;
सभी जीवों में देखे श्रीहरि को, उसे सारा जगत निर्दोष दिखे रे... जाने दे ०५

# प्रसादी के केश

एक बार श्रीजीमहाराज गढ़पुर में नाई के पास हजामत करा रहे थे। एक हरिभक्त के छोटे बेटे ने नाई से पहले ही कह रखा था कि, 'महाराज की हजामत कर लो उसके बाद महाराज के वह केश मुझे प्रसादी रूप में देना।' नाई ने बेटे को हां कहा था। इसलिए हजामत पूरी होने तक यह सत्संगी का बेटा केश की आशा से वहीं दूर बैठा रहा। फिर हजामत करके नाई वहां से चले गए और सत्संगी के बेटे को केश देना भूल गए। इससे वह रोने लगा।

दूर से महाराज परिस्थिति परख गए। बच्चे को रोता देख महाराज ने निकट आकर उसके सिर पर हस्त रखकर पूछा, "बेटा, तू क्यों रो रहा है ?" तब बच्चे ने कहा, "इस नाई भाई ने मुझे आपके प्रसादी के केश देने की हां भरी थी और मुझे अभी तक सामने बिठाकर रखा और वे तो चले गए। लेकिन मुझे केश देना भूल गए, महाराज !!" इतना बोलते ही वह फिर सिसकियां भरने लगा। अति सरल और सहज मूर्ति महाराज ने कहा, "बेटा, तू रो मत। ले, यहां आ और हमारी शिखा से केश काट ले।" बच्चे ने कहा, "नहीं महाराज, मैं ऐसा नहीं कर सकता।" लेकिन महाराज रह न सके और स्वयं हाथ में कैंची लेकर अपनी शिखा से केश काटकर उस बच्चे को दिएं और उसे शांत किया और राजी किया।

इस प्रकार, हम भी प्रेरणा लें कि, दूसरों का क्या ? और दूसरों को क्या ? यह सोचकर दूसरों के स्थान पर बैठने का प्रयास करें।

# बेंत की छड़ी

सागर से मिलती एक नदी बहुत प्रसन्न थी। सागर ने नदी से उसके आनंद का रहस्य पूछा। नदी ने कहा कि, ''मुझे आपके पास वर्षों से आना था लेकिन मार्ग में एक पहाड़ बीच में आ रहा था।''

वर्षों तक पानी से थपेड़ थपेड़कर उसे कमजोर करके मैंने तोड़ दिया और हमारा मिलन हुआ।

सागर ने नदी से कहा, ''एक काम मेरे लिए करोगी ? देखो पास में बेंत की छड़ियां खड़ी हैं। उनमें से दो-चार लाकर दो। मुझे प्रवाह में बहाना है।'' नदी तुरंत जहां बेंत उगे थे वहां पहुंची। पूरा दिन पानी से भारी थपेड़ा लेकिन हर बार बेंत ने झुककर पानी को जाने दिया और उसे कुछ नहीं हुआ। शाम को हार-थककर नदी वापस लौटी और सागर को बात बताई। सागर ने कहा, ''देखा ? पर्वत को तोड़ सकी क्योंकि वह अकडु था। बेंत में झुकने का गुण है इसलिए उसे कोई असर नहीं हुई। हर बार वह झुक जाकर तुम्हें मार्ग कर देती थी।''

परिवार, सत्संग और व्यवहार में भी जो झुकता है उसके साथ के संबंधों में कोई दरार डालने में सक्षम नहीं बनते।

इस प्रकार, संसार-व्यवहार में तथा सत्संग में निर्विघ्न रहने हमें सभी के आगे झुककर रहना चाहिए। दो हाथ जोड़कर सरल होकर रहना चाहिए।

## श्रीजीमहाराज की बाड़ी

एक बार बापाश्री की बाड़ी में पीपल के पेड़ पर तीन छोटी लड़कियां टेटियां (पीपली) उतारने के लिए चढ़ी हुई थीं। देवुबा ने दूर से उन्हें देख लिया, इसलिए ऊंचे स्वर में डांटते डांटते वह वहां पहुंच गएं। इससे दो लड़कियां तो जल्दी से भाग गईं, लेकिन एक लड़की ऊपर ही रह गई। उसने सोचा कि, 'अब अगर मैं तने से उतरूंगी तो मुझे पकड़ लेंगे।' डर के मारे वह डाल पर चली गई ताकि डाल झुके तो वहां से नीचे उतर जाए। उतने में तो डाल टूटी। उस समय बापाश्री दूर खड़े थे। उन्होंने यह देखा तो तुरंत वहां पहुंच गए और लड़की को लपक लिया। फिर वे देवुबा से कहने लगे कि "डांटना और चिल्लाना ही आता है या कुछ और भी आता है ? अगर लड़की गिर जाती तो ! पेड़ के फल तो पक्षी भी खाएं और बच्चें भी खाएं। पेड़ भी महाराज के है, बच्चें भी महाराज के हैं, इसमें हमें क्या तो इतना चिढ़ते हैं ? बेचारे घर से आकर पेड़ पर चढ़े इसमें उन्हें मेहनत नहीं लगी होगी ? यहां आकर फल खाएं वह तो अक्षरधाम में जाएं। क्योंकि यह बाड़ी श्रीजीमहाराज की है। इसलिए बच्चों से भूल हो जाए तो प्रेम से समझाना और बड़ा मन रखकर माफ करना, लेकिन डांटना नहीं।"

बापाश्री का ऐसा प्रेमपूर्ण और क्षमाशील व्यवहार देखकर बाड़ी में काम करने वाले साथी को बहुत गुण आया। बापाश्री के सरल व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता यही थी कि किसी से छोटी-बड़ी गलती हो जाए तो उसकी गांठ बांधने (याद रखने) की बजाय सहजता से माफ कर निश्चिंत कर देते। इस प्रकार, हम भी दूसरों की गलतियों को सरलता से माफ करके, निश्चिंत हो जाएं और निश्चिंत करें।

# संपूर्ण समर्पित

दिनांक २६-१२-२००९ को शनिवार के दिन वडोदरा मूर्तिप्रतिष्ठा का द्वितीय दिन था। राजीपादर्शन का कार्यक्रम था। तन-मन-धन से हृदयपूर्वक सेवा निभाने वाले प्रेरणादायी पात्रों को गुरुदेव तथा गुरुजी का राजीपा मिल रहा था।

श्री अर्पणभाई रमेशभाई पटेल का नाम बोला गया तो वे आगे स्टेज पर राजीपा लेने आए। गुरुजी ने माइक लिया और भरसभा के बीच उन्हें राजीपा दिया तथा उन्हें पूछे बिना ही घोषणा की, ‘‘अर्पणभाई को तो अब हमें अपनी निकट की सेवा में ले लेना है। है न तैयार ?’’

उस समय अर्पणभाई ने बिल्डर लॉबी का नया नया धंधा शुरू किया था। फिर भी बिना कोई विचार किए तुरंत हां कह दी। उनके पिता जी ने कहा, ‘‘बेटा, थोड़ा सोचकर हां कहना। बेटी छोटी है। धंधा का अभी ठीक से सेटिंग नहीं हुआ है। भविष्य का सोचना।’’ अर्पणभाई ने कहा, ‘‘सत्पुरुष आज्ञा करें फिर उसमें सोचना कैसा ? हम तो संपूर्णतः उन्हें समर्पित हैं। वह कहें फिर हाथ ही जोड़ने होते हैं।’’ तब से लेकर आज तक श्री अर्पणभाई गुरुदेव और गुरुजी को समर्पित होकर जीवन जी रहे हैं।

इस प्रकार, हम भी गुरुजी कोई आज्ञा करें तो दलील या स्पष्टता न करते हुए निःसंशय होकर वचन का तत्काल पालन करें।

## हलवी ले ( चला ले ) वह साधु

एक बार गुरुदेव प.पू. बापजी राजकोट विचरण में पधारे थें । उस समय गुरुदेव को बायपास सर्जरी कराई हुई थी इसलिए वह अधिकांश सोफे में बैठे बैठे ही सोते । राजकोट मंदिर में ऐसे सोफे की व्यवस्था नहीं थी इसलिए वैसा ही सोफा बनवाकर राजकोट मंदिर में उस दिन भेजना था । परंतु कारणवश समय पर मंदिर में सोफा नहीं पहुंचाया जा सका ।

रात हो गई और गुरुदेव प.पू. बापजी को सोने का समय हुआ । पू. संतों ने गद्‌गद स्वर में प्रार्थना की, ''बापजी, सोफा मंगवाया है परंतु कुछ कारणवश पहुंचा नहीं । क्या करें ? राजी रहना । किसी हरिभक्त के घर से दूसरा लंबा सोफा मंगवा दे ?''

हमेशा चला लेने की भावना रखने वाले गुरुदेव ने सहज शब्दों में कहा, ''संतों, चिंता मत करो । ये दो प्लास्टिक की कुर्सियां हैं न ! यही हमारा सोफा !! इसमें बैठे बैठे सो जाएंगे । चला ले उसका नाम साधु ।''

गुरुदेव पूरी रात दो प्लास्टिक की कुर्सियों पर बैठे बैठे सोएं । गुरुदेव की चला लेने की भावना में पू. संतों को गुरुदेव के सरल व्यक्तित्व के दर्शन हो रहे थे ।

इस प्रकार, गुरुदेव प.पू. बापजी की तरह हम भी छोटी-बड़ी असुविधा में चला लेने की भावना रखें ।

## सच्ची प्रेरणा

एक परिवार में पुत्रवधू बहुत सरल और विवेकी। एक दिन सासुमां ने कहा, ''बेटा, आज भिंडी की सब्जी बनाना।'' बाहर से क्रिकेट खेलकर आए हुए मुन्ना ने कहा, ''मॉम, आज टिंडा की सब्जी बनाओगे ? आई लाइक इट।'' उसकी मम्मी ने कहा, ''बेटा, दादी की इच्छा आज भिंडी की सब्जी खाने की है इसलिए आज भिंडी, कल टिंडा।'' मुन्ना ने बैट फेंका और जिद पकड़ ली, ''टिंडा की सब्जी नहीं बनेगी तो मैं आज कुछ नहीं खाउंगा।'' मजबूरी में मुन्ना को राजी रखने के लिए उसकी मम्मी ने टिंडा की सब्जी बनाई।

दोपहर में परिवार के सभी सदस्य साथ मिलकर भोजन करने डाइनिंग टेबल पर बैठें। टिंडा की सब्जी देखकर सासुमां गुस्सा होकर चिल्लाएं, ''क्यों टिंडा ? भिंडी नहीं !! मुझे पता है तुझे टिंडा बहुत पसंद है। इसलिए परिवार में दूसरें सदस्यों की पसंद की ओर नजर ही नहीं करने की !'' पुत्रवधू ने ढीली आवाज में इतना ही कहा, ''हां मां, आपने कहा वैसा ही हुआ। कल से ध्यान रखूंगी।''

मुन्ना के पापा ने खाना खाने के बाद कहा, ''तुम्हारा दोष नहीं था, मुन्ना की जिद पूरी करने तुमने टिंडा की सब्जी बनाई तो मां के सामने स्पष्टता क्यों नहीं की ?'' उन्होंने शांत स्वर में कहा, “An ordinary parent just tells, a good parent explains, a better parent demonstrates and an ideal parent inspires.” अर्थात् ''साधारण माता-पिता

कहते हैं, अच्छे माता-पिता समझाते हैं, श्रेष्ठ माता-पिता व्यवहार से समझाते हैं और महान माता-पिता स्ववर्तन द्वारा प्रेरणा देते हैं ।'' हमारे मुन्ने की छोटी आंखें हमारे वाणी-व्यवहार का बहुत बारीकी से अवलोकन करती हैं । मां के साथ मैंने दलील करके खुलासा करने का प्रयास किया होता तो हमारे मुन्ने में भी दलील करने का स्वभाव प्रवेश कर जाता । मैं बिना दलील के, बिना गलती के सरल हो गई इसलिए मुन्ना भी सरल होने की ही प्रेरणा लेगा । बस, यही कारण है कि मैंने दलील करना टाला ।''

इस प्रकार, हम भी बच्चों को केवल उपदेश से नहीं बल्कि स्ववर्तन द्वारा सरल होने की प्रेरणा दें ।

**सरल होना वह मर्द का काम,**
**भले न संभले उसका अभिमान ।**
**प्रभु के दरबार में उसका ही होता नाम,**
**जग में बढ़े उसका ही सम्मान ।**
**'मैं' पन का भूले जो भान,**
**प्रभु कराते उसे अमृत का पान ।**
**जग में होते उसके ही गुणगान,**
**कहो ना सरल बनकर बढ़ाई है हमने ऐसी शान !!**

## बाल्कनी बाकी रह गई !!

दिनांक ९-११-२०२२ और बुधवार का दिन था। वासणा में प्यारे हरिकृष्ण महाराज के साथ प्यारे गुरुजी की पधरामणी आयोजित हुई थी। पधरामणी में घर घर हरिभक्तों द्वारा प्यारे हरिकृष्ण महाराज तथा प्यारे गुरुजी का भावपूर्ण स्वागत होता था। हरिभक्तों के घर पहुंचते ही सबसे पहले महाप्रभु की दिव्य आरती होती। उसके बाद गुरुजी हर कमरे में जल की अंजलि छिड़कने पधारते।

एक घर में पधरामणी के दौरान प्यारे गुरुजी को किसी हरिभक्त ने जल छिड़कने छोटा पानी भरा गिलास दिया। गुरुजी गिलास लेकर जल छिड़कने पधार रहे थें। उस समय उस घर के छोटे बालमुक्त पानी भरा लोटा हाथ में लेकर आए और गुरुजी को देते हुए बोले, ''दयालु, इसमें से जल छिड़कना है।'' गुरुजी ने राजी होकर लोटा ले लिया और गिलास बालमुक्त को दे दिया। जल का लोटा लेकर गुरुजी उसमें से जल छिड़कने लगे। घर के हर कमरे में जल छिडकने के बाद गुरुजी मुख्य बैठक कक्ष में कुर्सी पर विराजमान होने जा रहे थे तभी बालमुक्त ने सहजता से फिर प्रार्थना की, ''गुरुजी, बाल्कनी बाकी रह गई !!'' गुरुजी ने तुरंत पूछा, ''बाल्कनी कहां है ?'' मुक्तराज ने बताया कि, ''बाल्कनी रसोईघर के बाहर है।'' गुरुजी तुरंत रसोईघर से होते हुए बाल्कनी में जल छिड़कने पधारें। गुरुजी की तरह हम भी अपने स्टेटस का विचार छोड़कर छोटे-बड़े सभी के आगे सरल होकर व्यवहार करें।

इस प्रकार, गुरुजी ने छोटे बालमुक्त के आगे सरल होकर उन्हें राजी किया।

## संबंधों में संवादिता

रात के नौ बज गए थे। एक पिता ने अपने पुत्र को सोने जाने को कहा। पुत्र ने आनाकानी की तो पिता गुस्सा होकर बोले, ''कल स्कूल जल्दी जाना है इसकी तुझे कोई परवाह ही नहीं ! रतजगा करेगा तो बीमार पड़ जाएगा। जल्दी सोने जा।'' बेटे ने बेअदबी से जवाब दिया, ''नहीं, नहीं जाऊंगा...''

पिता का गुस्सा तो आसमान पर पहुंच गया। पुत्र की बांह पकड़कर उसे कमरे में घसीटकर ले जाने के लिए पिता उसके सामने गए। तभी अचानक पिता के मन में कोई विचार उभर आया, ''किसी कारण से आज उसे सोने जाने का मन नहीं है तो क्या हो गया ? कभी-कभार ऐसा हो भी सकता हे।'' यह विचार आते ही उनका गुस्सा शांत हो गया। अपनी बात छोड़कर धीरे से पुत्र के कंधे पर प्रेम से हाथ रखकर पिता ने पूछा, ''क्यों आज क्या है ? सोने जाने का मूड नहीं है क्या ? कोई बात नहीं। चल, हम दोनों बातें करें।''

पुत्र तो पिता के इस व्यवहार से आश्चर्यचकित हो गया। अभी तो उग्रता से व्यवहार कर रहे पिता में इतना बदलाव ! उसके बाद पिता जैसे कुछ हुआ ही नहीं वैसे दूसरें विषयों पर बातें करने लगे। बातें करते करते दोनों सोने कमरे में गए। पिता बेटे के साथ उसके मित्रों के बारे में, उसे पसंदीदा खेलों के बारे में बातें करते रहे।

इस दौरान पुत्र ने रात को सोते समय पहनने के कपड़े पहन लिए और खुद ही सो गया। उसके चेहरे पर कोई तनाव या विरोध नहीं बल्कि प्रसन्नता थी। अपनी बात, अपनी मान्यता

छोड़कर सामने वाले के स्थान पर बैठकर संबंधों में संवादिता पैदा करके सरल हो जाने वाले व्यक्ति सदा सुखी रहते हैं।

इस प्रकार, हम किसी के साथ भी बात करते समय पहले उनकी बात को ध्यान से सुनें और उसका अर्थ समझें; उसके बाद ही जवाब दें।

**चलो सजें सरलता के श्रृंगार**

बीते दिन क्या वापस आएंगे फिर ?
संबंध और समय की वैल्यू है सच्ची !!
दोष मेरा था या तेरा ? उस बात को बिसार दें जरा...
अहंकार के पिंजरे से मुक्ति अब लें,
श्रृंगार सरलता के अब सजें।
कर देंगे यदि मनचाहा का गुलाल,
तो नहीं रहेगा जिंदगी में कोई सवाल।
जिंदगी है एक,
संबंध है अनेक।
संबंधों को संभालने बनें थोड़े समझदार;
बांधी हुई गांठें छोड़ने, नहीं खर्च करने पड़ते कोई पैसे,
केवल गाएं स्वजीवन द्वारा सरलता के गीत;
मात्र 'आज' हमें मिली है सवाई (ज्यादा बेहतर),
कल किसने देखा है मेरे भाई !!

## इट्स ओके

दिनांक २३-२-२०१५ को गुरुदेव प.पू. बापजी नरोडा प्रातः सभा में लाभ देने पधारे थें। इस दिन गुरुदेव की तबीयत बहुत नादुरस्त थी। इसलिए कथा का लाभ नहीं दे सकें। गुरुदेव ने पू. सिद्धांतस्वामी को कथा करने की आज्ञा की।

उस समय 'स्वरूपनिष्ठा' पुस्तक के लेखनकार्य की सेवा चल रही थी। जिसके निरीक्षण की सेवा स्वयं गुरुदेव प.पू. बापजी करते थे। पू. संत गुरुदेव के पास बैठकर पुस्तक के लिखे कागज पढ़कर सुनाते और गुरुदेव सुधार कराते। इस 'स्वरूपनिष्ठा' पुस्तक के कार्य हेतु से पू. राजीपास्वामी नरोडा आए थे। ऐसे ही विचार से कि सभा के बाद गुरुदेव को आधा घंटा समय मिले तो उस दौरान सुधार करा सकें। गुरुदेव की तबीयत नादुरस्त थी इसलिए वासणा जाकर पुस्तक के लिए बैठक करने की रुचि बताई।

परंतु पू. सिद्धांतस्वामी ने प्रार्थना की, "बापजी, यदि यहां पुस्तक की सेवा का कार्य पूरा हो जाए तो स्वामी को वासणा तक न आना पड़े और गाड़ियों के पेट्रोल-डीजल का खर्च भी बचे।" इतना सुनते ही गुरुदेव ने अपनी रुचि छोड़ देते हुए कहा, "कोई बात नहीं, ऐसा करते है। चलो, यहीं बैठ जाते है।" पौना घंटा मिटिंग चली। जिसमें गुरुदेव ने राजी होकर अपने अभिप्राय बताए।

इस प्रकार हमने कुछ तय किया हुआ कोई छुड़वाए तो तुरंत ही सरल होकर 'It's ok, ठीक है।' कहकर सरल हो जाएं।

## युवक और वृद्ध पिता

एक युवक अपने वृद्ध पिता को रेस्तरां में भोजन कराने ले जाता है। भोजन करते समय वृद्ध पिता से दाल की कटोरी गिर जाती है। उनके पैंट और शर्ट दाल से खराब हो जाते हैं। रेस्तरां में बैठे अन्य ग्राहकों के मुंह बिगड़ते हैं लेकिन पिता-पुत्र शांति से भोजन खत्म करते हैं। भोजन के बाद पिता ने पुत्र की ओर देखकर कहा, "बेटा, यह साफ..!" पिता वाक्य समाप्त करें उससे पहले ही पुत्र खड़ा हो गया। हाथ पकड़कर पिता को खड़ा किया और पुत्र ने पिता को वॉशबेसिन के पास ले जाकर हाथ धुलाकर, उनके शर्ट-पैंट को साफ करके सिर पर कंघी फेरकर, चश्में को कान पर ठीक से बिठा दिया। ग्राहक सिर उठाकर यह दृश्य देख रहे होते हैं। पुत्र काउंटर पर बिल चुकाकर पिता का हाथ पकड़कर बाहर जाने कदम बढाता है तब वेटर थोड़ी उंची आवाज में बोलता है, "साहब, आप भूल से यहां कुछ छोड़कर जा रहे हैं।" युवक का हाथ तुरंत पैंट और शर्ट के जेब पर जाता है। चाबी और फोन सुरक्षित होने की पुष्टि करके जवाब देता है, "नहीं... मैं कुछ छोड़कर नहीं जा रहा।"

वेटर ने कहा, "साहब वाह, आपकी नम्रता ! यहां बैठे हर युवा पुत्र के लिए आप एक पाठ छोड़कर जा रहे हैं कि परिवार में माता-पिता यदि अनपढ़ हों, वृद्ध हों, असमर्थ हों लेकिन प्रेम से उनका नम्रभाव से स्वीकार करके उनकी हृदयपूर्वक सेवा करें।"

इस प्रकार, हम भी परिवार के सदस्यों की मर्यादा को जान रखें और सरलता से उनका स्वीकार करके उनके साथ प्रेम से व्यवहार करें।

## आप कहो वह

सन २०१३ में गुरुदेव प.पू. बापजी साधक तालीम केंद्र, स्वामिनारायण धाम में सायं ४ बजे समर्पित मुक्तों तथा पू. पार्षद मुक्तों को लाभ देने पधारे थें। गुरुदेव प.पू. बापजी को सभा में गढ़डा प्रथम का ७ वां वचनामृत लेने की इच्छा थी। इसलिए वचनामृत हस्त में लेकर प्रथम का ७ वां वचनामृत निकालते निकालते गुरुदेव ने साधक तालीम केंद्र की सेवा संभालते पू. संत से पूछा, ''स्वामी, आज सभा में क्या लेना है ?'' स्वयं तय किए वचनामृत पर लाभ देने की रुचि होने पर भी कितनी सरलता से पूछा कि, 'आप कहें वह लें।' पू. संत ने प्रार्थनापूर्वक कहा, ''बापजी, सभी को आपके मुख से साधुता के कीर्तन पर लाभ लेने की इच्छा है फिर भी आपकी जैसी मर्जी।''

गुरुदेव प.पू. बापजी ने कहा, ''ठीक है, कीर्तन लेते हैं।'' ऐसा कहकर तुरंत वचनामृत बंद किया और कीर्तन सरिता लेकर साधुता के कीर्तन पर सायं ७ बजे तक अस्मिता से भरा लाभ दिया।

इस प्रकार हमें भी छोटे-बड़े सभी के आगे अपनी मर्जी छोड़कर सरल होकर दूसरों की रुचि में रहना चाहिए तो सभी का राजीपा ले सकें।

## सुझाव बॉक्स

विशाल आश्रम में प्रभुप्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ रहे कुछ मुमुक्षु रहते थे। एक बार गुरु ने सार्वजनिक रूप से संकल्प बताया कि, ''एक महीने में सभी को मनचाहा छोड़कर सरल स्वभाव वाले बन जाना है।'' एक शिष्य बहुत स्वाभिमानी, गुस्सेवाले। मनचाहा करना और दूसरों से कराना वह उनके लिए बाएं हाथ का खेल था। गुरु के प्रति अपार प्रीति थी। गुरु का वचन तत्काल ग्रहण करना था। वे मन से मजबूत बने। अनेकों को सुझाव देनें में कभी पीछे न हटनेवाले इस शिष्य ने सुझाव बॉक्स बनाया। ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा : 'मुझे सुझाव दो।' फिर लिखा, 'मेरे लिए आपके सुझाव स्वीकार्य हैं। सुझाव देंगे तो आपका दिल से आभार मानूंगा। मुझ स्वाभिमानी को सरल बनाने में मदद करोगेजी।' सुझाव बॉक्स अपने कमरे के बाहर लगाया।

शुरुआत में कुछ पूर्वाग्रही शिष्यों ने एक-दो चिठ्ठी डाली। जिनको वह पॉजिटिव लेकर सुधार करने लगे। सभी की तरफ से रिव्यू आने लगे : 'वह तो बहुत बदल गए हैं।' 'सुझावों को बहुत पॉजिटिव ले रहे हैं।' 'मुझे तो खुद सामने से Thank You कहा' एक महीने में चमत्कार हो गया। उनके गुणों का गुरु के आगे गान होने लगा। गुरु राजी होकर बोले, ''सच्चा सुझाव वह दीपक है जो अंधकार में रास्ता दिखाता है।'' सुझाव करने वाले से सुझाव स्वीकार करने वाला अनंतगुना महान बन जाता है।

इस प्रकार, हम भी दैनिक जीवन में किसी ऐसी व्यक्ति की सलाह सुनें और स्वीकार करें जिसे हम साधारण समझकर अनदेखा कर देते हैं।

## गाड़ी का रास्ता

एक बार गुरुजी प.पू. स्वामीश्री वडोदरा विचरण के लिए पधार रहे थें। वडोदरा हाइवे से मंदिर पहुंचने के दो रास्ते हैं। एक, वडोदरा सिटी से होते हुए मंदिर जाया जाता है। जो रास्ता छोटा लेकिन ट्रैफिक ज्यादा होता है। दूसरा रास्ता वडोदरा सिटी को बायपास करके मंदिर पहुंचा जाता हैं। जो रास्ता थोड़ा लंबा लेकिन बिना ट्रैफिक का होता है।

गुरुजी की रुचि ऐसी कि भले ही रास्ता लंबा हो लेकिन बिना ट्रैफिक वाला हो उस रास्ते से जाना। गाड़ी वडोदरा हाइवे से नीचे उतरी तो ड्राइवर मुक्त ने गुरुजी से पूछा, "दयालु, गाड़ी किस रास्ते से लूं ?" अभी गुरुजी कुछ उत्तर करें उससे पहले साथ के पू. संत ने सहजभाव से कहा, "वडोदरा सिटी से गाड़ी ले लो।" ड्राइवर मुक्त गुरुजी की रुचि जानते थे इसलिए उन्होंने गुरुजी की ओर दृष्टि की। तब बहुत सरलता से गुरुजी ने कहा, "भाई, कोई बात नहीं। स्वामी ने कहा वैसे वडोदरा सिटी से ले लो। हमें तो किसी भी रास्ते से मंदिर ही पहुंचना है न !"

गुरुजी के साथ में रहने वाले हर एक को सहज ही प्रतीति होती है कि गुरुजी सिद्धांत और नियम-धर्म का पालन करने में और करवाने में जितने अडिग हैं उतने ही रोजाना जीवन-व्यवहारों में सरल हैं।

इस प्रकार, हम भी सिद्धांत और नियम-धर्म के अलावा अन्य ममलों में तय किया हुआ छोड़कर सरल हो जाएं।

## गलती का स्वीकार

एक सुखी परिवार था। परिवार में छोटे–बड़े किसी की भी गलती हो तो दादा जी सभी को सच्चा उपदेश देकर सच्ची दिशा में मोड़ने में काबिल थे। एक दिन दादा के जेब में से छोटे सोहम ने दस रुपये बिना पूछे ले लिए। जो दृश्य बाथरूम से बाहर निकलते दादा देख गए। सोहम ने उनमें से रसगुल्ला खाया। शाम को दादा ने परिवार के सदस्यों की कांफ्रेंस बुलाई और गंभीर स्वर में कहा, ''मेरे जेब में से दस रुपये गुम हो गए हैं। किसने लिए हैं ?'' कोई कुछ नहीं बोला। दादा फिर बोले, ''अपनी गलती का स्वीकार करना केवल प्रामाणिकता ही नहीं बल्कि साहस का प्रतीक है।''

इतना सुनते ही सोहम दादा के निकट आया और अपनी रसगुल्ले वाली जीभ बाहर निकालकर दिखाते हुए कहा, ''दादा जी, आपके इस सोहम ने रसगुल्ला खाने के लिए आपको बिना पूछे दस रुपये ले लिए थे।'' सोहम ने कान पकड़े। दादा जी ने उसका कान मरोड़ते हुए कहा, ''बेटा शाबाश ! तूने सामने से गलती की स्वीकृति की। तू बहादुर है। बेटा, गलती को छुपाना वह नामर्दी है, अभिमान है। जो सरल और साहसी होता है वही अपनी गलती कबूल सकता है। बेटा, पैसे तो फिर कमा लिए जाएंगे लेकिन सरल होकर गलती को कबूल कर लेने का गुण दुनिया की किसी बाजार, बिजनेस से कमाया नहीं जा सकता यह याद रखना। बिना पूछे पैसे लेना चोरी है जबकि पूछकर लेना वह संस्कार है। इसलिए किसी की चीज लें तो पूछकर लेनी चाहिए। वह संस्कार तुझ में बने रहे इसलिए तुझे गलती कबूल करने का यह

एक मौका दिया था।" कहते ही दादा जी ने सोहम को गले लगा लिया।

इस प्रकार, सोहम की तरह हम भी कोई छोटी-बड़ी गलती हो जाए तो निर्भय होकर 'हां, यह मेरी गलती है' कहकर सरलता से गलती कबूल करना सीखें।

● ● ●

सरल होने के बाद कहकर दिखाना, यह सच्ची सरलता नहीं बल्कि अहंकार का पोषण है। सरलता का डकार खाने की जरूरत नहीं।

● ● ●

मैं ही सच्चा हूं और मेरा ही सच्चा है, ऐसा मान लेना और मनवाने का प्रयास करना यह दुनिया का स्वभाव है। आप सच्चे हो सकते हैं, हम वैसा करें, ऐसा स्वीकार लेना यह दिल की अमीरी है।

● ● ●

● **जीवन के तीन सुनहरें सूत्र :**

**१. अपनी मनमर्जी को छोड़ देना है।**

**२. महाराज और सत्पुरुष की रुचि में ही रहना है।**

**३. झट से मुड़ जाना है।**

## एक प्रदक्षिणा अधिक

दिनांक १६-४-२०१८ को वासणा मंदिर में अपने नित्यक्रम अनुसार प्यारे गुरुदेव प.पू. बापजी सायं ५:१५ बजे संत आश्रम के हॉल में व्हीलचेयर पर विराजमान होकर पधारें। दो-तीन दिनों से गुरुदेव को चलना नहीं हुआ था। इसलिए सेवक संत ने प्रार्थना की, "बापजी, आज थोड़ा चलें तो अच्छा।" गुरुदेव को चरणों में थोड़ा दर्द था फिर भी संतों की प्रार्थना का स्वीकार करके गुरुदेव चलने को तैयार हुए।

संत आश्रम में संतों के ठाकोरजी के सिंहासन को फिरते गुरुदेव ने चलते हुए पांच प्रदक्षिणाएं की। गुरुदेव यदि और एक अधिक प्रदक्षिणा करें तो अवरभाव में स्वास्थ्य के लिए अधिक अच्छा रहेगा। इसलिए पू. संतों ने गुरुदेव से प्रार्थना करते हुए सहजभाव से कहा कि, "बापजी, महाराज ने वचनामृत में आज्ञा की है कि हमारे भक्त ने नित्यपूजा में एक दंडवत अधिक करना। इसलिए एक प्रदक्षिणा अधिक करनी चाहिए।" तब गुरुदेव ने कहा, "ऐसा ??" फिर हंसते हंसते एक प्रदक्षिणा अधिक की और कहा, "लो बस, आपकी आज्ञा का भी पालन किया और महाराज की आज्ञा का भी पालन किया... आप सब राजी हुए न !" देखा, गुरुदेव ने सरलता वह राजी करने का बड़ा उपाय है यह सिखाया।

इस प्रकार, हम भी परिवार के सदस्यों को राजी रखने वे जो रुचि में बरतने का अनुसंधान दें उसमें राजी होकर बरतें।

## अखबार वाले भाई

रोज सुबह एक भाई वॉकिंग करने निकलते तब एक अखबार वाले के पास से अखबार खरीदते । अखबार वाले भाई इस भाई को रोज मुस्कान देते । लेकिन यह महाशय स्वाभिमान के मिजाज में उसे अनदेखा करते । अखबारों की गड्डी से एक अखबार खींचते और पैसे अखबार वाले भाई की ओर फेंकते ।

अखबार वाले भाई ये पैसे उठा लेते और नम्रतापूर्वक हल्की मुस्कान के साथ हमेशा कहते, "थैंक यू सर ।"

ऐसा रोज का क्रम । ग्राहक का व्यवहार उद्धत और अखबार वाले भाई का प्रतिसाद विवेकी । एक बार अखबार वाले भाई से किसी ने पूछा,

"तू उस भाई के सामने हमेशा इतनी सभ्यता क्यों दिखाता है ? उसका व्यवहार तो तेरे साथ हमेशा कितना उद्धत-अविवेकी ही होता है । तो कल वह आए तब उसकी ओर अखबार फेंककर तू भी 'जैसे के साथ वैसे' वाला व्यवहार करके उसे भी पाठ पढ़ा देना ।" अखबार वाले भाई ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "वह उद्धताईभरा व्यवहार छोड़ सकते नहीं और मैं नम्रताभरा विवेकी व्यवहार त्याग सकता नहीं । मुझे क्यों अपने सभ्य व्यवहार पर उनके उद्धताईभरे व्यवहार को सवार होने देना चाहिए ?"

इस प्रकार, कई बार हमारे साथ कोई उद्धताईभरा वाणी-व्यवहार करें तब सामने प्रतिक्रिया न देते हुए हमें अपनी नम्रता नहीं छोड़नी चाहिए ।

## स्वभाव की फ्लेक्सिबिलिटी

दिनांक १-२-२०१६ को प्यारे गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री साधक तालीम केंद्र के समर्पित मुक्तों को शिविर में लाभ दे रहे थे : "राजीपा के मार्ग में परम विघ्नरूपी विषय है अपना स्वभाव। उसमें भी सबसे बड़ा स्वभाव अर्थात् मनमुखी स्वभाव, तय किया हुआ न छोड़ पाने का स्वभाव। हमारा हृदय कोमल मक्खन जैसा होना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में हम अपना छोड़कर सरल होकर रह सकें। हमारे स्वभाव में इतनी फ्लेक्सिबिलिटी होनी चाहिए कि हमने तय किया हो तो भी तुरंत छोड़ सकें।" तभी एक पू. संत ने गुरुजी की सरलता का प्रेरणादायी प्रसंग समर्पित मुक्तों के आगे प्रस्तुत करना शुरू किया, "हाल ही में हमारी पू. संतों की शिविर संतूर फार्म में थी। गुरुजी भोजन करने पधारे। सर्दी के कारण गुरुजी ने बाहर धूप में बैठकर भोजन करने का सोचा था। इसलिए गुरुजी धूप में जाकर विराजे। वहीं एक पू. संत ने गुरुजी को धूप न आए इस हेतु से प्रार्थना की, "गुरुजी, यहां नहीं, वहां छांव में बैठते है।" तुरंत गुरुजी 'ठीक है दयालु, वहां बैठते हैं।' कहकर छांव में विराजे। वास्तव में गुरुजी की रुचि धूप में बैठने की थी। लेकिन पू. संतों की प्रार्थना होते ही अपनी रुचि छोड़ दी। सरल होकर अपना स्थान बदल लिया। जिसमें न कोई स्पष्टता न कोई दलील !! भोजन कर लेने के बाद गुरुजी ने हमारे सामने अपनी रुचि की बात प्रस्तुत की।"

इस प्रकार, हम भी हर संजोग में हर एक के आगे अपनी पसंद छोड़कर सरल होने की आदत डालें।

## सच्ची महानता

एक सुप्रसिद्ध वकील थे। जिन्हें देश-विदेश में बहुत सम्मान मिले थें। एक बार वे एक गांव की सभा में वक्ता के रूप में नियुक्त हुए। सभा स्थल पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि गांव के पढ़े-लिखे युवाओं के साथ एक वृद्ध किसान भी बैठे थे।

वकील साहब ने नम्रतापूर्वक उनके पास जाकर हाथ मिलाया और उनके पास ही बैठ गए। लोगों को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। उनका नंबर आने पर वे वक्तव्य देने खड़े हुए और वक्तव्य पूरा होने पर एक युवक ने पूछा, "साहब, आप जैसे महान व्यक्ति को इस सामान्य किसान के पास बैठना कैसे चले ?"

वकील साहब ने हंसते हुए समझाया, "भाई, ज्ञान और पद कभी भी अहंकार का कारण नहीं बनने चाहिए। क्योंकि सच्ची महानता नम्रता में और न्यूनभाव से व्यवहार करने में ही छुपी हुई है। इस वृद्ध किसान के अनुभव से भी मैं बहुत कुछ सीख सकता हूं। गांव का रास्ता ऐसे किसान ही बता सकते हैं, वहां वकालत की कोई वैल्यू नहीं रहती।" यह सुनकर वृद्ध किसान की आंखें भीग गईं। वकील साहब का न्यूनभाव सभी को स्पर्श कर गया।

इस प्रकार, वकील साहब की तरह अब से हम भी ऐसी व्यक्ति से कुछ सीखने का प्रयास करें जिन्हें हम बिलकुल साधारण गिनते हों।

**थोड़ा झुका सा और शांत सा, वह पेड़ उस बाग में सबसे बड़ा होगा।**

## साइकिल का भाव

दिनांक २५-१०-२०१७ को गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री ज्ञानसत्र-११ में संध्या सेशन में हजारों मुमुक्षुओं को कथावार्ता का लाभ दे रहे थें। गुरुजी ने किसी विषय के संबंध में लाभ देते हुए बात की कि, ''अभी साइकिल का भाव २५०० रुपये होगा।''

सभी ने कहा, ''हां दयालु।''

एक हरिभक्त जोर से बोले, ''दयालु, अभी ५००० रुपये की भी साइकिल मिलती है।'' गुरुजी ने कहा, ''ठीक है, ५००० रुपये की साइकिल।''

वही हरिभक्त फिर बोले, ''गुरुजी, ८००० रुपये की साइकिल भी अभी मिलती है।'' गुरुजी ने कहा, ''ठीक है, ८००० रुपये की साइकिल रखो।''

उन्होंने फिर आगे कहा, ''दयालु, १०,०००-१२,००० रुपये की भी साइकिल मिलती है।'' गुरुजी ने बिलकुल सहजता से कहा, ''ऐसा !! ठीक है तो इतने की रखो...''

आहाहा ! हजारों लोग सभा में बैठे होने पर भी सभा के बीच ऐसी छोटी बात में भी कितनी निखालिसताभरी सरलता !! इस प्रकार, हम भी छोटी छोटी बातों में दूसरों को अनुकूल-एडजस्ट हो जाकर ऐसी सरलता रखें।

**सरलता तो मनुष्य का श्रृंगार है, जिसमें न हो अभिमान वही हृदय की कोमलता है।**

## श्रेय किसके सिर पर ?

एक सुप्रसिद्ध संगीतकार ने विश्वप्रसिद्धि प्राप्त की । उनकी संगीत सुरावली से प्रभावित लोग उन्हें देव समान मानते । एक बार उन्हें बहुत बड़ा पुरस्कार देकर सम्मानित करने विशाल समारोह आयोजित हुआ । समारोह में जब उनका नाम घोषित किया गया तब वे स्टेज पर नहीं गए बल्कि ऑडिटोरियम की पिछली पंक्ति में बैठे एक वृद्ध के पास पहुंचे । उनकी आंखों में आंखें मिलाकर आर्द्रभाव से हाथ जोड़े और उनके चरणों में झुक गए । उनके आशीर्वाद लेकर ही वे स्टेज पर चढ़े ।

समारोह में आगे की पंक्ति में बैठे उनके छोटे पुत्र से नहीं रहा गया तो उसने कहा, ''पापा, आप इतने महान बनने के बाद भी इस ऑडियन्स में बैठे साधारण अंकल को क्यों चरणस्पर्श करते हो ?'' संगीतकार ने हंसकर कहा, ''बेटा, मैं आज जो कुछ भी हूं वह इस अंकल के प्रताप से हूं । वे मेरे संगीत के बेस्ट टीचर थे । मेरी सफलता का समस्त श्रेय वास्तव में उनके सिर जाता है । बेटा, आम आएं तो आम का पेड़ झुकता है वैसे गुण, प्रसिद्धि, वाह वाह और सम्मान मिले उसके साथ जिस व्यक्ति में नम्रता आए वही सच्ची महानता है ।'' संगीतकार के नम्रताभरे व्यवहार ने सभा में बैठे सभी के हृदय जीत लिए । उनकी सफलता से ज्यादा उनकी नम्रता ने उन्हें अधिक मान दिया ।

इस प्रकार, हम भी अपनी सफलता के कारण ऐसे महाराज, सत्पुरुष, गुरु, संतों, मार्गदर्शक, परिवार के सदस्यों तथा मित्रों के आगे सदैव झुकते रहें ।

## पोजिटिव रिक्वेस्ट

एक बार स्वामिनारायण धाम में समैया (उत्सव) था। एक हरिभक्त ने गुरुजी से मिलने प्रार्थना की। पू. संतों ने गुरुजी को जानकारी दी। गुरुजी ने कहा, ''ठीक है, उन्हें आसन में बुला लो।'' यह हरिभक्त गुरुजी के आसन पर पहुंचे और गुरुजी को दंडवत करके सामने बैठे।

गुरुजी ने मृदु भाषा में उनका स्वागत किया और आने का कारण पूछा। हरिभक्त ने अपनी बात शुरू की कि अचानक गुरुजी को याद आया कि उन्हें तत्काल एक फोन करना था। सामने उस हरिभक्त की बात चल रही थी। लेकिन फोन करना भी अति आवश्यक था।

इसलिए गुरुजी ने बहुत महिमापूर्ण वचन से, दासभाव से विनती करते हुए कहा कि, ''दयालु ! राजी रहना। लेकिन सेवक को तत्काल एक फोन करना है। जो मैं भूल गया था। तो मुझे १५-२० मिनट की अनुमति देंगे ? तो वह फोन निपटा दूं।'' यह हरिभक्त तो गुरुजी का दासभाव और नम्रताभरी विनती को देखकर गद्गद होकर बोले, ''गुरुजी ! आपको पूछना ही नहीं होता !'' इस प्रकार, गुरुजी की नम्रता-सरलता देखकर हरिभक्त गुरुजी को वंदन करते रहे।

इस प्रकार, गुरुजी की तरह हम भी हमेशा अपनी बात विनती के रूप में ही कहें।

## संबंधों की कीमत

एक रॉयल स्वभाव के सासु पहले दिन से ही बहू को बेटी कहने लगें। उन्हें बहुत प्यार से चौदह हजार रुपये की नाक की नथनी पहनाई। लेकिन बहू से गलती से नथनी कहीं खो गई। उसी दिन सासु को यह बात पता चल गई। उन्होंने सुनार के पास जाकर दूसरी नथनी सात ही दिनों में बनाकर दे देने को कहा।

बहू तो 'सासुमां कितना गुस्सा होंगी ?' यह सोचकर बिल्ली के सामने चूहे की तरह लगातार कांप रही थी। लेकिन आश्चर्य !! सातवें दिन दोनों भोजन करने बैठे थें। सासुमां ने नई आई नथनी बहू के नाक में प्यार से फिट कर दी और केवल इतना ही कहा, "बेटी ! अब ठीक से संभालना। फिर खो न जाए।" बहू बोली, "मां, मैंने नुकसान किया फिर भी आप मुझ पर जरा भी गुस्सा क्यों नहीं हुई ??" सासु ने कहा, "बेटी, यदि गुस्सा करूं तो तेरे साथ का मीठा मधु जैसा संबंध हमेशा के लिए खोना पड़े। जो मैं खोना नहीं चाहती और भूल जाकर सरल हो जाऊं तो मेरा तेरे साथ का संबंध अमृत जैसा बन जाए। हमारे इस संबंध के सामने १४ हजार रुपये गए उसका कोई मूल्य नहीं।" उस रात बहू ने मम्मी को मायके में पत्र लिखा, 'मम्मी ! ससुराल आते मुझे लगा था कि मैंने मम्मी खो दी लेकिन अब लगता है कि मैंने सवाई मम्मी पाई है।'

इस प्रकार, आपस में कुछ हो तो जाने देकर सरल हो जाएं, माफी दे दें तो संबंध जीवित रहें।

## गुरुजी के कृपावचन

हमसे बड़े हों उनके आगे अपना पसंदीदा (मनचाहा) छोड़कर सरल हो जाना और छोटों को प्रेम देकर राजी करना। आत्मीयता करने के लिए यह अनिवार्य है। हमसे बड़े के आगे अपनी पसंद छोड़कर तो देखो... राजी हो जाएंगे। करके तो देखो, हमें सरल करने की भावना तो रहती है लेकिन सरल होने की भावना नहीं होती। सरल करना है ? तो, सरल हो जाएं। गेहूं चाहिए तो गेहूं बोएं। राजी करो तो राजी हो सकेंगे।

● ● ●

हमारा स्वभाव कोमल चाहिए। हृदय कोमल, निर्मल रखें। जैसे भी मोड़े तो मुड़ जाएं ऐसे सरल बनें। कोई कुछ भी कहे वहां तुरंत सामने दलील न करें, सामने बोल न देना। बिलकुल सरल हो जाएं। महाराज, सत्पुरुष और संत-भक्त हमारा सिलेक्शन करें ऐसे कोमल स्वभाव वाले बनें।

● ● ●

देहाभिमानी का सबसे बड़ा लक्षण किसी के भी आगे सरल न हो सके। निर्मानी हो वह सरल हो जाते हैं। उस पर महाराज का अपार राजीपा हो जाता है।

● ● ●

जो महाराज और सत्पुरुष के आगे सरल हो गया उसके साधनकाल के सभी साधन सरल हो जाते हैं। आसानी से पूरे हो जाते हैं।

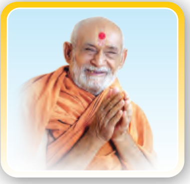

आद्य स्थापक
गुरुदेव प.पू. बापजी

## संस्थापक गुरुदेव प.पू. बापजी
## गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री परिचय

दिव्य प्रेरक
गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री

"सिद्धांत में समाधान नहीं और नियम-धर्म में छूट नहीं।" - इस सूत्र को जीवनभर धारण करके भगवान श्री स्वामिनारायण की आज्ञा-उपासना और महिमा का सर्वजन के हित में प्रचार करने वाले गुरुदेव प.पू. बापजी एक सिद्धांतवादी सत्पुरुष हैं। गुरुदेव प.पू. बापजी की निर्दोष साधुता, धर्म-नियम की अणीशुद्धता, निर्मानीपन और श्रीजी का कर्तापन आदि गुणों ने लाखों के जीवन में प्रेरणा के पीयूष पीलाए हैं। गुरुदेव प.पू. बापजी ऐसे क्रांतिकारी युगपुरुष हैं कि जिनके अल्प जोग से मुमुक्षु को भगवान स्वामिनारायण के स्वरूप की यथार्थ पहचान हो जाती है ओर आत्यंतिक कल्याण की प्राप्ति हो जाती है। अवरभाव की ८६ साल की उम्र तक उन्होंने विशेष रूप से पंचमहाल और समग्र गुजरात के अनगिनत गांव में तथा देश-विदेश के अनेक शहरों में विचरण किया था। हजारों भक्तों के घरों की व्यक्तिगत मुलाकात की थी। उनके अथाक प्रयत्नों से लाखों संत-हरिभक्तों के जीवन में परिवर्तन के दीये प्रकाशमान हुए हैं।

उनके क्रांतिकारी कार्यों को और अधिक वेग देकर जन-जन तक उनका संदेश पहुंचाने के लिए गुरुदेव प.पू. बापजी की आज्ञा से प्यारे गुरुवर्य प.पू. सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री संस्था का नेतृत्व संभाल रहे हैं। साथ ही गुरुदेव प.पू. बापजी के तमाम कल्याणकारी गुणों को धारण कर आदर्श शिष्यत्व शोभा रहे हैं। उन्हें स्वयं स्वामिनारायण भगवान ने प्रतिमा से प्रकट होकर दीक्षा दी और आशीर्वाद दिए कि : **"चाहे कैसा भी अधम और पापी जीव हो लेकिन तू उसके मोक्षसंबंधी जो जो संकल्प करेगा वो हम सत्य करेंगें और अंत में मूर्ति के सुख मे पहुंचाएंगे। हम सदैव तेरे साथ हैं। तेरे सभी संकल्प पूरे होंगे। इसलिए हम तेरा नाम साधु सत्यसंकल्पदास रखते हैं।"**

आज देश-समाज में आध्यात्मिक उन्नति का कार्य हो या फिर समाज सेवा का अत्यंत कठिन कार्य हो इसमें गुरुवर्य प.पू. सत्यसंकल्पदासजी स्वामीश्री की निरंतर प्रेरणा मिलती रही है। उनकी प्रेरणा से ही **SMVS** संस्था के संत, कार्यकर्ताओ अविरत विचरण करके जीवन परिवर्तन के साथ देहभाव से पृथक् होकर आत्मभूमिका पर जाकर अनादिमुक्त की स्थिति पाकर सदेह स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति का सुख पाने का दिव्य संदेश जन-जन तक पहुंचा रहे हैं। ऐसी उच्च आध्यात्मिकता के साथ शैक्षणिक सेवाएं, चिकित्सा सेवाएं, भूंकप पीड़ितो की सहायता तथा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में राहतकार्य की सेवाएं और सरकार द्वारा आते रचनात्मक आयोजनों में भी गुरुवर्य प.पू. स्वामीश्री की प्रेरणा से संस्था सक्रिय रूप से जुड़ती रही है। गुरुदेव प.पू. बापजी और गुरुजी प.पू. स्वामीश्री ने एक बात कही है कि **SMVS** संस्था द्वारा हो रहे सभी सेवाकार्य का श्रेय स्वामिनारायण भगवान के चरणों में ही समर्पित है। उनकी ही दिव्य प्रेरणा से संस्था की आन-बान-शान पूरे विश्व में फैल रही है।

विशाल आश्रम में प्रभुप्राप्ति के मार्ग पर आगे बढ़ रहे कुछ मुमुक्षु रहते थे। एक बार गुरु ने सार्वजनिक रूप से संकल्प बताया कि, ''एक महीने में सभी को मनचाहा छोड़कर सरल स्वभाव वाले बन जाना है।'' एक शिष्य बहुत स्वाभिमानी, गुस्सेवाले। मनचाहा करना और दूसरों से कराना वह उनके लिए बाएं हाथ का खेल था। गुरु के प्रति अपार प्रीति थी। गुरु का वचन तत्काल ग्रहण करना था। वे मन से मजबूत बने। अनेकों को सुझाव देनें में कभी पीछे न हटनेवाले इस शिष्य ने सुझाव बॉक्स बनाया। ऊपर बड़े अक्षरों में लिखा : 'मुझे सुझाव दो।' फिर लिखा, 'मेरे लिए आपके सुझाव स्वीकार्य हैं। सुझाव देंगे तो आपका दिल से आभार मानूंगा। मुझ स्वाभिमानी को सरल बनाने में मदद करोगेजी।' सुझाव बॉक्स अपने कमरे के बाहर लगाया।

शुरुआत में कुछ पूर्वाग्रही शिष्यों ने एक-दो चिठ्ठी डाली। जिनको वह पॉजिटिव लेकर सुधार करने लगे। सभी की तरफ से रिव्यू आने लगे : 'वह तो बहुत बदल गए हैं।' 'सुझावों को बहुत पॉजिटिव ले रहे हैं।' 'मुझे तो खुद सामने से **Thank You** कहा' एक महीने में चमत्कार हो गया। उनके गुणों का गुरु के आगे गान होने लगा। गुरु राजी होकर बोले, ''सच्चा सुझाव वह दीपक है जो अंधकार में रास्ता दिखाता है।'' सुझाव करने वाले से सुझाव स्वीकार करने वाला अनंतगुना महान बन जाता है। इस प्रकार, हम भी दैनिक जीवन में किसी ऐसी व्यक्ति की सलाह सुनें और स्वीकार करें जिसे हम साधारण समझकर अनदेखा कर देते हैं।